रात्री क्लास। ओमशान्ति 27-9-67

(क्लास में प्रेम बहन अनुभव सुनाये रही थी कि मत बाप, दादा कहते हैं आशीर्वाद क्या नहीं मांगनी है। परन्तु सम्मुख आने से आटोमेटकली आशीर्वाद मिलती ही है। इस पर बाप दादा ने बोला क्या बाप की आशीर्वाद मिलती है?) बाप कहते रहते हैं मैं टीचर हूं पढ़ाता रहता हूं। जो पढ़ेंगे वह अच्छा पद पावेंगे। बाकि मैं आशीर्वाद करूं तो सब आगे चले जायें। (हम मांगते नहीं है, आपे ही मिलती है।) आशीर्वाद करना अस रांग है। क्योंकि आशीर्वाद से कुछ होता नहीं है। कहते हैं चिरन्जीवी भव, पुत्रवान भव, धनवान भव। कहने कुछ मिलता है क्या। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग में जो कुछ तुम मांगते हो वह देता नहीं हूं। मैं ड्रामा अनुसार अपनी फर्ज अदाई समझ आता हूं। बाप के पास जो वर्सा है वह बच्चों को देने लिए बांधा हुआ है। देता है पढ़ाते है। श्रीमत पर चले तो अपने ऊपर आशीर्वाद कर सकते है। इसको कहते हैं दुःख हर्ता, सुख कर्ता। तो सभी को देना पड़े। क्योंकि सभी बच्चे हैं। आशीर्वाद भक्ति मार्ग का अक्षर है। ज्ञान का नहीं। बच्चों को कुछ भी मालूम नहीं बेहद का बाप क्या वर्सा देते हैं। सतयुग में यह पता नहीं रहता है। यह आगे को पुरुषार्थ को प्रालब्ध मिलती है। बाप कहते है मामेकं याद करो तो जैसे कि अपने ऊपर आशीर्वा करते हो। टीचर पढ़ाते हैं। टीचर की मत से अपने ऊपर आशीर्वाद करते हैं। श्रीमत से तुम जितना उंच बनने चाहो बन सकते हो। तुम बच्चे याद रखो हम बाबा के हैं। तुम बच्चों को चित्रों पर बहुत सेवा करनी है। तुम स्वर्ग की बादशाही पाय रहे हो। दुनिया वाले अगर समझे हम नर्कवासी है तो अपने ऊपर नफरत हो जाये। परन्तु बेसमझ बुद्धि समझते नहीं। तुमको समझाना है शिव बाबा की उंच ते उंच मत है। गायन भी है प्रभु तुम्हरी गत मत तुम्हीं जानो। तुम ऐसे नहीं कहेंगे। तुम जान गये हो सदगति कैसे दुर्गति कैसे होती है। तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर बैठे हो। किसको समझाना बहुत सहज है। पूछे भारत की क्या सेवा करते हो? बोलो विश्व में शान्ति का राज्य स्थापन कर रहे हैं। कल्प पहले किया था। तुम बच्चों को खुशी भी रहनी चाहिए। परन्तु तुम भूल जाते हो। बाबा ने समझाया है एक दिन ढिंढोरा पिटेंगे। यह विश्व में शान्ति का राज्य स्थापन हो रहा है एक धर्म की स्थापना हो रही है। बाप को याद करने से राजा रानी बनेंगे। बाप ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। बाप कितना सहज कर समझाते हैं। पर बच्चियां भूल जाती हैं। बाप को याद करो तो खुशी का पारा चढ़े। नहीं तो पारा चढ़ता ही नहीं। कुछ भी याद न रहे। इनका कुछ भी न रहा है। किसको याद करेंगे। याद की यात्रा से सतोप्रधान जरूर बनना है। हमारे लिए ही दुनिया ठहरी हुई है। तुम देखेंगे कैसे लड़ाईयां लगती है। अनन कहेंगे माया लड़ाती रहती है। बाप थोड़े ही बच्चों को लड़ावेंगे। बच्चों को क्षीर खण्ड होना है। क्षीर सागर के भेंट में यह है विषय सागर। ड्रामा में अत्याचार आद का भी प्रबंध है। सुदर्शन आद भी आपना धंधा करेंगे। पिछाड़ी में सभी का विनाश हो जावेंगे। चित्रों के पर्दे भी बनेंगे। इन से बहुत फायदा होगी। नालेज कोई बल नहीं है। योगबल मशहूर है। बाप कहते है मामेकं याद करो और 84 के चक्र को याद करो। ज्ञान तो बहुत सहज है। धंधा आद भल करो परन्तु याद को न भूलो। पैसे काम में तो आने नहीं है। इसलिए बाप को याद करते चलते चलो। भुल है याद की यात्रा। तो वेस्ट टाईम न करो। देखना है किसको दुःख तो नहीं दिया। कोई आसुरी अवगुण तो नहीं है। कोई पूछे तो समझाना चाहिए प्रजापिता ब्रह्मा के तो ढेर बच्चे हैं। अपने ही तन, मन, धन से भारत की सेवा कर रहे हैं। और को जानते ही नहीं है कि यह क्या पढ़ते हैं। ज्ञान बड़ा विचित्र है। तुम्हारा यह है राजयोग। बाकि कोई खाना न खाते हैं, पानी न पीते है, वह है हठयोग। यहां हठयोग की बात नहीं। साधारण चलना है। पहले 2 तो विकारों को छोड़ना है। हीरे जैसा बनना है। क्रिमनल आई न हो। बाकि प्याज आद लाचारी हालत में खाना पड़ता है। देखो दृष्टि देकर खाओ और क्या करेंगे। तुम राजयोगी हो। शरीर की सम्भाल करनी है। यह मोस्ट वेलुएबल शरीर है। योग बल भी और कुछ सम्भाल भी करनी है। बाकि मांस आद न हो खाना है। इसकेलिए तो गवर्मेन्ट प्रबंध देती है। अच्छा 22 मीठे 2 बच्चों को गुडनाईट।